Dr. Ashish Mohan
(UGC NET – Commerce & Management)
Contact No: 9430393030

वित्तीय प्रबंधन का परिचय

वित्तीय प्रबंधन का अर्थ और परिभाषा:

- वित्तीय प्रबंधन, सामान्य प्रबंधन की वह शाखा है, जो पूरे उद्यम को विशिष्ट और कुशल वित्तीय सेवाएं प्रदान करने के लिए विकसित हुई है; विशेष रूप से, आवश्यक वित्त की समय पर आपूर्ति और उनका सबसे प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना-उद्यम के सामान्य उद्देश्यों की सबसे प्रभावी और कुशल प्राप्ति में योगदान करना।

वित्तीय प्रबंधन की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ नीचे दी गई हैं:

- "वित्तीय प्रबंधन वित्तीय निर्णय लेने का एक क्षेत्र है जो व्यक्तिगत उद्देश्यों और उद्यम लक्ष्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।" **—वेस्टन और ब्रिघम**

- "वित्तीय प्रबंधन प्रबंधकीय निर्णयों से संबंधित है जिसके परिणामस्वरूप फर्म के लिए दीर्घकालिक और अल्पकालिक ऋणों का अधिग्रहण और वित्तपोषण होता है। जैसे, यह उन स्थितियों से संबंधित है जिनमें विशिष्ट परिसंपत्तियों और देनदारियों के चयन के साथ-साथ उद्यम के आकार और विकास की समस्याओं की आवश्यकता होती है। इन निर्णयों का विश्लेषण धन के अपेक्षित अंतर्वाह और बहिर्वाह और प्रबंधकीय उद्देश्यों पर उनके प्रभावों पर आधारित है।" **—फिलिपटस**

- **हॉवर्ड और अप्टन** वित्तीय प्रबंधन को "एक संगठन में प्रशासनिक क्षेत्र या प्रशासनिक कार्यों के सेट के रूप में परिभाषित करते हैं, जिसका संबंध नकदी के प्रवाह के प्रबंधन से है ताकि संगठन के पास अपने उद्देश्यों को यथासंभव संतोषजनक ढंग से पूरा करने के साधन हों और उसी समय अपने दायित्वों को पूरा करता है जैसे वे देय हो जाते हैं।
- **बोनविले और डेवी** व्याख्या करते हैं कि वित्त पोषण में व्यवसाय के संबंध में उपयोग किए जाने वाले किसी भी प्रकार के सभी धन, पूंजी या धन को जुटाना, उपलब्ध कराना और प्रबंधित करना शामिल है।

Dr. Ashish Mohan

- **ऑस्बन** वित्तीय प्रबंधन को "एक व्यवसाय द्वारा धन प्राप्त करने और उपयोग करने की प्रक्रिया" के रूप में परिभाषित करता है।

वित्तीय प्रबंधन की उपरोक्त परिभाषाओं का विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं के संदर्भ में किया जा सकता है:

i. वित्तीय प्रबंधन सामान्य प्रबंधन की एक विशेष शाखा है।
ii. वित्तीय प्रबंधन का मूल परिचालन उद्देश्य पूरे उद्यम को वित्तीय सेवाएं प्रदान करना है।
iii. वित्तीय प्रबंधन द्वारा उद्यम को एक सबसे महत्वपूर्ण वित्तीय सेवा आवश्यक समय पर आवश्यक (अर्थात आवश्यक) वित्त उपलब्ध कराना है। यदि आवश्यक धन आवश्यक समय पर उपलब्ध नहीं कराया जाता है; वित्त का महत्व खो गया है।
iv. वित्तीय प्रबंधन द्वारा उद्यम के लिए एक और समान रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय सेवा वित्त का सबसे प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना है; लेकिन जिसके लिए वित्त एक परिसंपत्ति होने के बजाय एक दायित्व बन जाएगा।
v. उद्यम को वित्तीय सेवाएं प्रदान करने के माध्यम से, वित्तीय प्रबंधन उद्यम के सामान्य उद्देश्यों की सबसे प्रभावी और कुशल प्राप्ति में मदद करता है।

<u>वित्तीय प्रबंधन की प्रकृति या विशेषताएं या विशेषताएं</u>

- वित्तीय प्रबंधन की प्रकृति इसके कार्यों, इसके लक्ष्यों, परस्पर विरोधी लक्ष्यों के साथ समझौता, इसकी अनिवार्यता, इसकी प्रणालियों, फर्म में अन्य उप-प्रणालियों के साथ इसके संबंध, इसके पर्यावरण, अन्य विषयों के साथ इसके संबंध, प्रक्रियात्मक पहलुओं और इसके संगठन के भीतर अन्य प्रभागों के साथ समीकरण।

1. वित्तीय प्रबंधन समग्र प्रबंधन का एक अभिन्न अंग है। सभी व्यावसायिक निर्णयों में वित्तीय विचार शामिल होते हैं। इसलिए वित्तीय प्रबंधन पूरे संगठन में व्याप्त है।
2. वित्तीय प्रबंधन का केंद्रीय फोकस फर्म का मूल्यांकन है। अर्थात् वित्तीय निर्णय फर्म के मूल्य को बढ़ाने/अधिकतम करने/अनुकूलित करने के लिए निर्देशित होते हैं।

Dr. Ashish Mohan

3. वित्तीय प्रबंधन में अनिवार्य रूप से जोखिम-वापसी व्यापार-बंद शामिल है निवेश पर निर्णयों में परिसंपत्तियों के प्रकार का चयन करना शामिल है जो जोखिम के साथ रिटर्न उत्पन्न करते हैं। आम तौर पर जोखिम अधिक होता है, रिटर्न अधिक हो सकता है और इसके विपरीत। इसलिए, वित्तीय प्रबंधक को यह तय करना होता है कि फर्म जोखिम के स्तर को कैसे ग्रहण कर सकती है और साथ में रिटर्न से संतुष्ट हो सकती है।
4. वित्तीय प्रबंधन फर्म के अस्तित्व, विकास और जीवन शक्ति को प्रभावित करता है। वित्त को व्यवसाय का जीवन रक्त कहा जाता है। यह व्यापार के लिए है, हमारे लिए क्या खून है। राशि, प्रकार, स्रोत, शर्तें और वित्त की लागत इकाई के कामकाज को पूरी तरह से प्रभावित करती है।
5. वित्त कार्य, अर्थात, निवेश, पूंजी का बढ़ना, लाभ का वितरण, सभी फर्मों में किया जाता है - व्यवसाय या गैर-व्यावसायिक, बड़ा या छोटा, मालिकाना या कॉर्पोरेट उपक्रम। हां, वित्तीय प्रबंधन हर चिंता का विषय है।
6. वित्तीय प्रबंधन व्यवसाय प्रणाली की एक उप-प्रणाली है जिसमें अन्य उप-प्रणालियां जैसे उत्पादन, विपणन, आदि हैं। सिस्टम व्यवस्था में वित्तीय उप-प्रणाली को दूसरों के साथ अच्छी तरह से समन्वयित किया जाना है और अन्य उप-प्रणाली वित्तीय उप-प्रणाली से अच्छी तरह मेल खाती हैं प्रणाली।

वित्त कार्य (वित्तीय प्रबंधन का दायरा)

- वित्त कार्य में फंड जुटाने, उन्हें परिसंपत्तियों में निवेश करने और परिसंपत्तियों से अर्जित रिटर्न को शेयरधारकों को वितरित करने की गतिविधियां शामिल हैं। इन गतिविधियों को करते समय, एक फर्म नकदी प्रवाह और बहिर्वाह को संतुलित करने का प्रयास करती है।
- यह स्पष्ट है कि वित्त कार्य में चार निर्णय शामिल होते हैं, जैसे वित्तपोषण निर्णय, निवेश निर्णय, लाभांश निर्णय और चलनिधि निर्णय।

इस प्रकार वित्त कार्य में शामिल हैं:

1. निवेश निर्णय
2. वित्तपोषण निर्णय
3. लाभांश निर्णय
4. चलनिधि निर्णय

Dr Ashish Mohan

1. <u>निवेश निर्णय:</u>

- निवेश निर्णय, जिसे पूंजी बजटिंग के रूप में भी जाना जाता है, एक निवेश प्रस्ताव/प्रस्तावों के चयन और चयनित प्रस्ताव में निधियों के निवेश से संबंधित है।
- पूंजी बजट निर्णय में लंबी अवधि की परिसंपत्तियों के लिए निधियों के आवंटन का निर्णय शामिल होता है जिससे भविष्य में नकदी प्रवाह प्राप्त होगा। निवेश निर्णयों के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं:

i. नए निवेशों की संभावित लाभप्रदता का मूल्यांकन, और

ii. नए निवेश के संभावित प्रतिफल की तुलना में कट-ऑफ दर का मापन किया जा सकता है।

- इसलिए निवेश प्रस्तावों का मूल्यांकन प्रत्याशित प्रतिलाभ और जोखिम दोनों के संदर्भ में किया जाना चाहिए।
- जोखिम-समायोजित रिटर्न की गणना और रिटर्न की आवश्यक दर, इन आधारों पर परियोजना का चयन, निवेश निर्णय की विषय-वस्तु है।
- दीर्घकालीन निवेश निर्णय आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

2. <u>वित्तीय निर्णय:</u>

- वित्तीय निर्णय वित्तीय प्रबंधक द्वारा निष्पादित किया जाने वाला दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। मोटे तौर पर, उसे यह तय करना होगा कि फर्म की निवेश जरूरतों को पूरा करने के लिए कब, कहां से और कैसे धन प्राप्त करना है।
- केंद्रीय मुद्दा इक्विटी और ऋण के उचित अनुपात का निर्धारण करना है। ऋण और इक्विटी के मिश्रण को फर्म की पूंजी संरचना के रूप में जाना जाता है।
- वित्तीय प्रबंधक को फर्म के लिए सर्वोत्तम वित्तीय मिश्रण या इष्टतम पूंजी संरचना प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। शेयरों का बाजार मूल्य अधिकतम होने पर फर्म की पूंजी संरचना को इष्टतम माना जाता है।

Dr. Ashish Mohan

3. <u>लाभांश निर्णय:</u>

- लाभांश निर्णय तीसरा प्रमुख वित्तीय निर्णय है। वित्तीय प्रबंधक को यह तय करना होगा कि फर्म को सभी लाभों को वितरित करना चाहिए या उन्हें बनाए रखना चाहिए, या एक हिस्से को वितरित करना चाहिए और शेष राशि वापस करनी चाहिए।
- लाभांश के रूप में वितरित लाभ के अनुपात को लाभांश-भुगतान अनुपात कहा जाता है और लाभ के बनाए गए हिस्से को प्रतिधारण अनुपात के रूप में जाना जाता है। ऋण नीति की तरह, लाभांश नीति को शेयरधारकों के मूल्य पर इसके प्रभाव के संदर्भ में निर्धारित किया जाना चाहिए।
- इष्टतम लाभांश नीति वह है जो फर्म के शेयरों के बाजार मूल्य को अधिकतम करती है। इस प्रकार, यदि शेयरधारक फर्म की लाभांश नीति के प्रति उदासीन नहीं हैं, तो वित्तीय प्रबंधक को इष्टतम लाभांश-भुगतान अनुपात निर्धारित करना चाहिए।
- लाभांश का भुगतान आम तौर पर नकद में किया जाता है। लेकिन एक फर्म बोनस शेयर जारी कर सकती है। बोनस शेयर मौजूदा शेयरधारकों को बिना किसी शुल्क के जारी किए गए शेयर हैं। वित्तीय प्रबंधक को व्यवहार में लाभांश स्थिरता, बोनस शेयर और नकद लाभांश के प्रश्नों पर विचार करना चाहिए।

4. <u>चलनिधि / तरलता निर्णय:</u>

- चालू परिसंपत्तियों में निवेश फर्म की लाभप्रदता और तरलता को प्रभावित करता है। तरलता के जोखिम के खिलाफ फर्म की सुरक्षा के लिए वर्तमान परिसंपत्तियों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन किया जाना चाहिए। चरम स्थितियों में तरलता की कमी से फर्म का दिवाला हो सकता है।
- चालू आस्तियों का प्रबंधन करते समय लाभप्रदता और चलनिधि के बीच एक संघर्ष मौजूद है। यदि फर्म चालू परिसंपत्तियों में पर्याप्त धनराशि का निवेश नहीं करती है, तो यह अतरल हो सकती है और इसलिए जोखिम भरा हो सकता है। लेकिन अगर फर्म मौजूदा परिसंपत्तियों में भारी निवेश करती है, तो यह ब्याज खो देगी क्योंकि निष्क्रिय चालू संपत्ति कुछ भी अर्जित नहीं करेगी।
- इस प्रकार, लाभप्रदता और तरलता के बीच एक उचित व्यापार-बंद प्राप्त किया जाना चाहिए। लाभप्रदता-तरलता व्यापार-बंद की आवश्यकता है कि वित्तीय प्रबंधक को वर्तमान परिसंपत्तियों के

Dr. Ashish Mohan

प्रबंधन की ध्वनि तकनीक विकसित करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जरूरत पड़ने पर धन उपलब्ध कराया जाएगा।

Dr. Ashish Mohan